शोध प्रारूप

मुण्डारी कथा साहित्य का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

पीएच0 डी0 हेतू प्रस्तावित शोध प्रारूप

वर्ष : 2024

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

शोध निर्देशक

मनय मुण्डा
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

दुतामी सुरिन
UGC-NET/JRF उतीर्ण
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>शोध प्रस्ताव</u>

<u>मुण्डारी कथा साहित्य का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन</u>

भूमिकाः

हमारे झारखण्ड प्रदेश अति रमणीय और प्राकृतिक घटाओं से परिपूर्ण है। इस क्षेत्र के अलावे मुण्डा जनजाति का क्षेत्र पूरे भारत देश में पाया जाता है परन्तु सबसे अधिक झारखण्ड बिहार] उड़ीसा] बंगाल] छत्तीसगढ़, असम और अण्डमान निकोबार राज्यों में पाये जाते है।

मुण्डा जनजाति भारत वर्ष की एक अति प्राचीन जाति है। प्राचीन काल में ये सिन्धु घाटी में रहा करते थे। वहाँ से ये कालिबोंगा] उत्तर प्रदेश की मण्डी होते हुए वर्तमान झारखण्ड राज्य में आ बसे और यहाँ निवास करने लगे। मुण्डा जाति छोटानागपुर के मूल निवासियों में एक मानी जाती है मुण्डा का अर्थ है गाँव का मूल व्यक्ति या मुखिया होता है मुण्डा जाति अपने को होड़ो भी कहते है। होड़ो का अर्थ मानव होता है इस होड़ो शब्द की ¼उत्पत्ति) पृथ्वी के समस्त जीव-जन्तुओं की सृष्टि के साथ जुड़े हुए है। इस संबंध में सबसे पहले भगवान ने जोंक की सहायता से पानी के अंदर से मिट्टी निकाली और धरती बनी उस पर घास] पेड़&पौधे और पशु&पक्षी पैदा हुए। उन्हीं पक्षियों में से हुर नामक एक पक्षी ने एक अण्डा दिया अण्डे में से दो मानव संतान एक लड़का और लड़की निकली। इन्हीं मानवों के नाम लुटकुम बुढ़ा और लुटकुम बुढ़िया कहा गया। उन्हीं से मुण्डा जाति का विकास शुरू हुआ। इन पक्षी के अण्डे से निकलने के कारण मानव होड़ो को या होड़ो होन को कहलाये।

हमारा झारखण्ड राज्य प्रकृति के गोद में बसा हुआ एक बहुभाषी क्षेत्र है जहाँ एक साथ तीन भाषा परिवारों की भाषाएँ बोली जाती है। अग्नेय भाषा परिवार में मुण्डारी] संताली] हो एवं खड़िया भाषा सम्माहित है। द्रविड़ भाषा परिवार में कुड़ुख] माल्तो आदि भाषा आती है] आर्य भाषा परिवार में पंचपरगनिया] नागपुरी, खोरठा तथा कुरमाली भाषाएँ आती है। परन्तु मुण्डाओं की भाषा को ही मुण्डारी भाषा में ¼होड़ो जगर½ कहा जाता है। यह मुण्डा भाषा आग्नेय भाषा परिवार के अन्तर्गत मुण्डारी] संताली] हो] खड़िया] इसके अलावे भूमिज] असुर] बिरहोर बिरजिया] कोरवा आदि भाषाएँ इनमें आती है।

कथा साहित्य में हम कहानी] उपन्यास] गद्य एवं पद्य साहित्य है लोकगीत] लोककथा] लोकगाथा] आदि पशु पक्षियों पर आधारित होती है। हम इस प्राकार कथा सहित्याकारों को प्रस्तुत कर सकते है। जगदीश त्रिगुणायत]

मनमसीह मुन्डू] भइयाराम मुण्डा] मेनस राम ओड़ेया] डॉ0 रामदयाल मुण्डा आदि है। इन्होंने पूर्वजों के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण कर जीवित रखा है। और जिन कहानियों का समय काल का पता नही चलता है उन्हीं कहानियों को लोककथा कहा गया है और जिन कहानियों के लेखकों और रचनाकाल का पता चलता है उन कहानियों को शिष्ट साहित्य में कहानी कहा गया है।

कथा साहित्य में वे कहानियाँ है जो मानव की लोककथा प्रकृति के साथ जुड़ते हुए विभिन्न परिवर्तनो के साथ वर्तमान रूप में प्राप्त होती है कुछ निश्चित कथानक रूढ़ियों और शैलियों में ढालकर लोककथाओं के अनेक संस्करणों में नित नयी प्रवृतियों और चरित्रों से युक्त होकर विकसित होती है। एक कथा ही विभिन्न संदर्भो और अंचलों में रूप बदलकर अलग रूप ग्रहण करती है मुण्डारी कथा साहित्य के साथ-साथ लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है।

मुण्डा जनजाति का रहन-सहन] चाल-चलन] खान-पान] काम-काज] धर्म-कर्म] पुजा-पाठ जन्म से मृत्यु तक के कार्यकाल ही उनकी सांस्कृतिक है जिनको उनकी दैनिक जीवन के आचार-विचार] जीवन परम्पराओं] नियमों एवं परम्पराओं संस्कारों रीति-रिवाजों का नियंत्रित होता है वैसे प्राचीन लोगों और पूवर्जों की कहानियों कथाओं को ही लोककथा कहा गया है।

परिकल्पनाः-

हमारे झारखण्ड राज्य के इस विस्तृत भू-भाग में जहाँ मुण्डारी भाषा को बोलने वाले पाए जाते हैं वहाँ तक मुण्डारी लोक-कथाओं का विकास होता रहा है अतः प्राचीन मुण्डारी कथा साहित्य के अन्तर्गत जिन लोक कथाओं का सृजन और विकास हुआ है उन्हें बाहर निकाल कर पाठकों तथा विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करना ही मेरा एक मात्र परिकल्पना है।

प्रेरणाः--

झारखण्ड मेरी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि है और मेरी मातृभाषा मुण्डारी होने के कारण बचपन से ही इस भाषा के प्रति लगाव रहा है स्नातक और स्नात्तकोत्तर की पढ़ाई के दौरान मुझे मुण्डारी भाषा व कथा सहित्य को पढ़ने का अवसर मिला मुण्डारी भाषा जो मुण्डा समाज की स्थिति] नारी समस्या को पारिवारिक स्थिति जिसमें सामाजिक] कुप्रथा] अशिक्षा] बेरोजगार] पालयन] प्रेम

आदि जानने को मिलता है और मुण्डा भाषा के सही रूपों को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना मेरी जिम्मेदारी ही नहीं बल्कि कर्तव्य भी है। अतः ऐसा प्रतीत हुआ कि इस पर गहन अध्ययन एवं शोध किया जाना प्रासंगिक होगा।

उद्देश्यः--

जब मैं एम0ए0 मुण्डारी भाषा का अध्ययन कर रही थी तो मुझे मुण्डारी कथा साहित्य को समग्रता से देखने जानने व अध्ययन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

इस प्रकार से यह मालूम हुआ कि इस समय में अधिक से अधिक लोग पाश्चात्य सांस्कृतियां को अपने ऊपर हावी होने दे रहें है और अपनी सामाजिक] सांस्कृति] धार्मिक तथा ऐतिहासिक विरासत को भूलते जा रहे है। इसी उद्देश्य से मैंने मुण्डारी कथा साहित्य का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन विषय में पीएच0डी0 रिसर्च के लिए जरूरी एवं उपयुक्त समझा। अतः इन लोककथाओं का संकलन करना और लोगों तक इनके प्रभावों को पहुँचाना ही मेरा एकमात्र उद्देश्य है।

शोध का महत्वः---

इस शोध प्रबंध का महत्व व्यापक है। मुण्डारी जानकर और साहित्यकार ही नहीं बल्कि अन्य भी मुण्डा भाषा व कथा साहित्य की विशालता श्रेष्ठता एवं इनकी विशेषता को जान सकेंगे। मुण्डा कथा साहित्य में मुण्डारी भाषियों के सुख-दुख हर्ष विवाद आदि का दस्तावेज है। इसमें इनके जीने की कला एवं संस्कृति की महानता आदि का आकलन हो सकेगा। और अपने साहित्य के भावों को जानना उसे बनाए रखना ही इसका महत्वपूर्ण दायित्व एवं लक्ष्य होगा।

शोध विषय की मौलिकताः--

अब तक इस विषय पर कोई भी शोध कार्य नहीं हो सकता है इस शोध कार्य में भविष्य में मुण्डा भाषा के अनेक पहलुओं पर नये सिरे से अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। इस शोध कार्य से मुण्डा भाषियों पर कथा साहित्य के प्रति आकर्षण एवं रूझान बढ़ेगा।

शोध विधिः--

किसी भी शोध कार्य की विधि वैज्ञानिक होती है। यह वास्तविक तथ्यों, प्रमाणों एवं निश्चित निष्कर्ष पर आधारित होता है। इस प्रकार मात्र कल्पता या

कुछ पुस्तकों के अध्ययन के द्वारा शोध पूर्ण नहीं की जा सकती है किन्तु वर्तमान समय में शोध की बढ़ती संभावनाओं के कारण साहित्यिक शोध से भी अनेक वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ समाविष्ट कर ली गई है। अतः लेखन कार्य को सम्पन्न करने के लिए निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का सहयोग लिया जा सकता है जैसेः--.

1. **साक्षात्कार विधि**
2. **व्यक्तिगत संम्पर्क**
3. **अवलोकन विधि**
4. **क्षेत्रीय कार्य**
5. **विश्लेषणात्मक विधि**

प्रस्तुत शोध कार्य का समाज में प्रभावः---

कहा गया है कि साहित्य समाज का दपर्ण होता है मुण्डा समाज की स्थिति का आकलन इससे हो सकेगा। ऐतिहासिक तथ्यों] पारिवारिक] सामाजिक] आर्थिक] प्राकृतिक जीवन दर्शन आदि समस्त प्रतिबिम्बों का दर्शन लोक कथाओं के शोध कार्य से ही संभव हो सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य की रूपरेखाः--

प्रस्तावनाः--

1. प्रस्तुत शोध कार्य की प्रेरणा एवं औचित्य
2. प्रस्तुत शोध कार्य की विषय सीमा
3. प्रस्तुत शोध कार्य की अध्ययन पद्धति

प्रथम अध्यायः मुण्डारी कथा साहित्य का सामान्य परिचय

1. उद्भव] महत्व] उपयोगिता एवं विकास
2. मुण्डारी कथा का सांस्कृतिक अध्ययन
3. मुण्डारी संस्कृति] उद्भव महत्व उपयोगिता एवं विकास

द्वितीय अध्यायः मुण्डारी कथा साहित्य

¼क½ लोककथा एवं साहित्य

¼ख½ लोकगाथा एवं साहित्य

¼ग½ लोकनाट्य एवं साहित्य

तृतीय अध्यायः मुण्डारी कथा का शिष्ट साहित्य

1. कहानी
2. नाटक
3. उपन्यास
4. एकांकी
5. यात्रा वृतांत

चतुर्थ अध्यायः मुण्डारी कथा का सांस्कृतिक पक्ष

1. लोककथा एवं संस्कृति
2. लोकगाथा एवं संस्कृति
3. लोकनाट्य एवं संस्कृति

पंचम अध्यायः मुण्डा कथाएँ और लोकजीवन

1. प्राचीन कथाएँ और जीवन
2. मध्यकालीन कथाएँ और जीवन
3. आधुनिक कथाएँ और जीवन

षष्ठ अध्यायः मुण्डा संस्कृति और लोकजीवन

1. जन्म] विवाह] मृत्यु संस्कार और जीवन
2. पर्व] त्योहार और जीवन
3. धर्म] दर्शन और जीवन

सप्तम अध्यायः वतर्मान मे कथाओं की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन की आवश्यकता

1. समाज और साहित्य की आवश्यकता
2. भविष्य के संभावित कार्य

<u>उपसंहार@निष्कर्ष&</u>

1. आधार ग्रंथ की सूची
2. संदर्भ ग्रंथ की सूची
3. पत्र-पत्रिकाओं की सूची

- ➢ नोटः-प्रस्ताविक शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक	शोधार्थी
मनय मुण्डा	दुतामी सुरिन
विभागाध्यक्ष	**UGC-NET/JRF** उतीर्ण
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग	स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय] राँची	राँची विश्वविद्यालय] राँची

आधार ग्रंथों की सूची

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	'मुण्डा' भैयाराम	दंडा जमा कन होड़ो कानि को	बिहार सरकार कल्याण विभाग	**1961**
2.	'ओड़ेया' मेनस राम	मतुराअः कहानि 5	सत्य भारती, राँची	1984
3.	**'हंस' सागु मुण्डा**	मुण्डाकोअः इतिहास		1977
4.	**'होरो' अमरदीप**	मुण्डा आदिवासियों का समाज, सांस्कृतिक और इतिहास	काथलिक प्रेस राँची	
5.	’मुण्डू’ मनमसीह	कुदुम ओड़ो सोलको	काथलिक प्रेस, राँची	1779
6.	**'मुण्डा' डॉ0 रामदयाल**	'एआ’ नवा कानि को		**1980**
7.	**'त्रिगुणायत' जगदीश**	मुण्डा लोककथा	अधिकक्षक सचिवालय शाखा मुद्राणालय, बिहार सरकार	1968
8.	डॉ तिर्की सिकरादास	मुण्डारी लोक साहित्य में इतिहास		2010
9.	**'त्रिगुणायत' जगदीश**	सोसोबोंगा	शिक्षक सहयोग भंडार, राँची	1960
10.	हस्सा तेज कुमार	मुण्डारी भाषा शिक्षण एवं साहित्य		2011

संदर्भ ग्रंथो की सूची

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	'आर्चर' जॉर्ज विलियम	मुण्डा दुराङ	काथलिक प्रेस, राँची	**1968**
2.	'ओड़ेया' मेनस राम	सिंगबोंगा ओडो एटअ: एटअः बोंगाको		
3.	'ओड़ेया' मेनस राम	मतुराअः कहानि-5 **VOL**	सत्य भारती, राँची	1984
4.	'काण्डे' काशीनाथ सिंह	गुइराम	मुण्डारी साहित्य संग्रह एवं प्रकाशन समिति, राँची	**1980**
5.	**'काण्डे'** काशीनाथ सिंह	ससंग बा	मुण्डारी साहित्य संग्रह एवं राँची	**1972**
6.	'केरकेट्टा' निकुदिम रशिम प्रेस, राँची	कुदुम ओड़ो सोलको	रशिम प्रेस, राँची	**1995**
7.	**'मुण्डा'** भैयाराम	दंडाजमाकन होड़ो कानि को	बिहार सरकार कल्याण विभाग	1961
8.	**'मुण्डा' डॉ0 रामदयाल**	सेलेद		1967
9.	**'मुण्डा' डॉ0 रामदयाल**	बा बोंगा सरहुल मंत्र	रूम्बुल	**2017**
10.	**'मुण्डा' डॉ0 रामदयाल**	आदि धरम		
11.	'मुण्डू' मनमसीह	कुदुम ओड़ो सोलको	काथलिक प्रेस राँची	1979
12.	**'मुण्डा' दुलायचंद**	बम्बरु	नॉवल्टी आर्टप्रेस-5	
13.	**'मुण्डा' दुलायचंद**	सुड़ा सगेन	नॉवल्टी आर्टप्रेस-5 मेन रोड, राँची	1778
14.	**'रॉय'** शरद्चंद	दा मुण्डा एण्ड देयार काण्टरी		1912
15.	'हंस' सागु मुण्डा	मुण्डा कोअः इतिहास		1977
16.	'होरो' दाउद दयाल सिंह	धर्म दुरङ		1968
17.	'होफमन' फादर जॉन बपतिस्त	मुण्डारी विश्वकोश **-16 VOL**	काथलिक प्रेस राँची	1950
18.	'हेमरोम' लॉरेन्स	l;j;´	झारखण्ड प्रेस राँची	1985

19.	सिलास 'हेमरोम' लॉरेन्स सिलास'	ओनोङ अर सनङ	झारखण्ड प्रेस राँची	1985
20.	**'त्रिगुणायत' जगदीश**	मुण्डा लोककथा	अधिकक्षक सचिवालय शाखा मुद्राणालय बिहार, राँची	1968
21.	**'त्रिगुणायत' जगदीश**	सोसो बोंगा	शिक्षक सहयोग भण्डार, राँची	1960
22.	**'त्रिगुणायत' जगदीश**	बांसुरी बज रही	कल्याण विभाग बिहार सरकार	1960

<u>पत्रिका की सूची</u>

	पत्रिका का नाम	**प्रकाशक / प्रकाशन**
1.	जगर साड़ा	एस**0** के**0** बागे
2.	जोहार	स**0** अ**0** व**0** दि**0** हँस
3.	बिहान पत्रिका	बुंडू
4.	नितिर सकम	एस**0** के**0** बागे
5.	मरसल	निरल एनेम होरो
6.	संगोम	डॉ**0** बिरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा'
7.	सनङ	सिलास हेमरोम
8.	आदिवासी	बिहार सरकार, राँची
9.	डहर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ
10.	सरना सकम	भइयाराम मुण्डा
11.	सम्पड़तिंग	स**0** अ**0** व**0** दि**0** हँस
12.	सेंड़ा सेतेङ	नवीन मुण्डू